❀ ओम् ❀

महर्षिस्वामीदयानन्दसरस्वती

और

मांसभक्षणनिषेध

संकलनकर्त्ता—

श्री ब्र० सत्यानन्द जी साहित्योपाध्याय

प्रकाशक—

स्वामी वेदानन्दतीर्थ

आर्य्यप्रतिनिधिसभान्तर्गत—

श्रीचमूपतिसाहित्यविभागाध्यक्ष,

गुरुदत्तभवन, लाहौर ।

❀ ओ३म् ❀

प्रकाशक का वक्तव्य

कई लोग मांसाहार के संबन्ध में नाना-प्रकार की झूठी युक्तियां और अशुद्ध प्रमाण दिया करते हैं और कहा करते हैं कि स्वामी दयानन्दसरस्वती जी ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थों और संन्यासियों के लिये मांसाहार का निषेध करते हैं, गृहस्थों के लिए नहीं। ऐसे लोगों के लिए यह संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। अमृतधारा वाले श्री पं० ठाकुरदत्त जी की प्रेरणा पर, और उनके स्थापित पं०ठाकुरदत्तशर्म्मा-धर्मार्थट्रस्ट की आर्थिक सहायता से यह ट्रैक्ट प्रकाशित हो रहा है। तदर्थ उनको धन्यवाद।

यह लघुपुस्तिका कदाचित् इतनी शीघ्र प्रकाशित न हो सकती, यदि श्री ब्रह्मचारी सत्यानन्द जी साहित्योपाध्याय सारे ऋषिवाक्यों को मिलाकर उचित रीति से संपादित न कर देते। उनकी इस अकारण कृपा के लिए उन्हें साधुवाद !

इस संग्रह में दयानन्द-ग्रन्थमाला में संकलित ऋषि-प्रणीत-ग्रन्थों से वचनों का संकलन किया गया है। वेदभाष्यों और पत्रों से एतद्विषयक वाक्यों का संकलन फिर कभी कराया जायेगा।

ऋषिबोधोत्सव ११६ द०

स्वामी वेदानन्दतीर्थ

❀ ओ३म् ❀

महर्षि दयानन्द

—और—

मांसभक्षणनिषेध

(१) ब्रह्मचारियों के लिए मांसभक्षण का सर्वथा निषेधः—

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य मांस गन्ध माला रस स्त्री और पुरुष का संग, सब खटाई, प्राणियों की हिंसा, अङ्गों का मर्दन, विना निमित्त उपस्थेन्द्रिय का स्पर्श, आंखों में अञ्जन, जूते और छत्र का धारण, काम क्रोध लोभ मोह, भय शोक ईर्ष्या द्वेष नाच गान और बाजा बजाना, द्यूत, जिस किसीकी कथा, निन्दा, मिथ्या-भाषण, स्त्रियों का दर्शन, आश्रय, दूसरे की हानि आदि कुकर्मों को सदा छोड़ देवें। स० प्र० पृ० १३६ द० प्र०

(२) गृहस्थियों के लिए मांसभक्षण का सर्वथा निषेधः—

मृगया अर्थात् शिकार खेलना, द्यूत और प्रसन्नता के लिए भी चौपड़ आदि खेलना, दिन में सोना, हंसी ठट्ठा मिथ्यावाद करना, स्त्रियों के साथ सदा अधिक निवास में मोहित होना, मद्यपानादि नशाओं का करना, गाना, बजाना, नाचना वा इन का देखना और वृथा इधर उधर घूमते फिरना ये दश दुर्गुण काम से होते हैं।...ये अठारह दुर्गुण हैं इनको राजा अवश्य छोड़ देवे। सं०वि०पृ०१७६द०प्र

नोट—यहां मद्यपानादि में मांसभक्षण भी आ जाता है।

(३) अन्यवर्गों के लिए मांसभक्षण का सर्वथा निषेधः—

नोटः—यहां पर संन्यासी का कर्तव्य बतलाते हुए स्वामी जी लिखते हैं:—

अपने आत्मा और परमात्मा में स्थिर, अपेक्षारहित, मद्य-मांसादिवर्जित होकर, आत्मा ही के सहाय से सुखार्थी होकर, इस

संसार में धर्म और विद्या के बढ़ाने में उपदेश के लिए सदा विचरता रहे। स० प्र० पृ० २३० द० प्र०

(४) मांस-भक्षण का सबके लिए निषेधः—

हिंसकः—देखो ईश्वर ने पुरुषों के दाँत कैसे पैने, मांसाहारी पशुओं के समान बनाए हैं; इस से हम जानते हैं कि मनुष्यों को मांस खाना उचित है।

रक्षकः—जिन व्याघ्रादि पशुओं के दाँत के दृष्टान्त से अपना पक्ष सिद्ध किया चाहते हो क्या तुम भी उसके तुल्य ही हो ? देखो, तुम्हारी मनुष्यजाति उनकी पशु-जाति, तुम्हारे दो पग और उन के चार, तुम विद्या पढ़ कर सत्यासत्य का विवेक कर सकते हो वे नहीं। और वह तुम्हारा दृष्टान्त भी युक्त नहीं क्योंकि जो दांत का दृष्टान्त लेते हो तो बन्दर के दांतों का दृष्टान्त क्यों नहीं लेते ? देखो बन्दरों के दांत सिंह और बिल्ली आदि के समान हैं और वे मांस नहीं खाते। मनुष्य और बन्दर की आकृति भी बहुत सी मिलती है। इसलिए परमेश्वर ने मनुष्यों को दृष्टान्त से उपदेश किया है कि जैसे बन्दर मांस कभी नहीं खाते और फलादि खाकर निर्वाह करते हैं वैसे तुम भी किया करो। जैसा बन्दरों का दृष्टान्त सांगोपांग मनुष्यों के साथ घटता है वैसा अन्य किसी का नहीं इसलिए मनुष्यों को अति उचित है कि मांस खाना सर्वथा छोड़ देवें।

हिंसकः—ये जितने उत्तर किए ये सब व्यवहार सम्बन्धी हैं। परन्तु पशुओं को मार के खाने में अधर्म तो नहीं होता ? और जो होना होगा तो तुम को होना होगा। क्योंकि तुम्हारे मत में निषेध है। इसलिए तुम मत खाओ और हम खायें। क्योंकि हमारे मत में मांस का खाना अधर्म नहीं।

रक्षक:—हम तुमसे पूछते हैं कि धर्म और अधर्म व्यवहार ही में होते हैं वा अन्यत्र ? तुम कभी सिद्ध न कर सकोगे कि व्यवहार से भिन्न धर्माधर्म होते हैं। जिस जिस व्यवहार से दूसरों को हानि हो वह वह अधर्म और जिस जिस व्यवहार से उपकार हो वह धर्म कहाता है। तो लाखों के सुख लाभकारक पशुओं का नाश करना अधर्म और उनकी रक्षा से लाखों को सुख पहुँचाना धर्म क्यों नहीं मानते ? देखो चोरी जारी आदि कर्म इस लिए अधर्म हैं कि इनसे दूसरे की हानि होती है। नहीं तो जो जो प्रयोजन धनादि से उन के स्वामी सिद्ध करते हैं वे ही प्रयोजन उन चोरादि के भी सिद्ध होते हैं। इसलिए यह निश्चित है कि जो जो कर्म जगत् में हानिकारक हैं वे वे अधर्म और जो जो परोपकारक हैं वे वे धर्म कहाते हैं। जब एक आदमी की हानि करने से चोरी आदि कर्म पाप में गिनते हो तो गवादि पशुओं को मार के बहुतों की हानि करना महापाप क्यों नहीं ? देखो मांसाहारी मनुष्यों में दयादि उत्तम गुण होते ही नहीं। किन्तु वे स्वार्थवश होकर दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करने ही में सदा रहते हैं। जब मांसाहारी किसी पुष्ट पशु को देखता है तभी उसकी इच्छा होती है कि इसमें मांस अधिक है मार कर खाऊं तो अच्छा हो और जब मांस का न खाने वाला उस को देखता है तो प्रसन्न होता है कि यह पशु आनन्द में है। जैसे सिंहादि मांसाहारी पशु किसी का उपकार तो नहीं करते किन्तु अपने स्वार्थ के लिए दूसरे का प्राण भी ले मांस खाकर अति प्रसन्न होते हैं, वैसे ही मांसाहारी मनुष्य भी होते हैं। इसलिए मांस का खाना किसी मनुष्य को उचित नहीं। गो० नि० पृ० ९२६—९२९ द० ग्र०

नोट:—स्वामी जी महाराज ने गोकरुणानिधि में पृ० ९२६ से लेकर पृ०

१३० तक एक हिंसक-रक्षक-संवाद लिखा है। इस विषय में जिज्ञासु भाइयों को उस संवाद का आद्योपान्त मनन करना चाहिए।

इसी विषय में इसी पृष्ठ पर आगे लिखा है। गो० नि० पृ० ६२१ द० ग्र०

हिंसक:—जिन पशुओं और पक्षियों अर्थात् जङ्गल में रहने वालों से उपकार किसी का नहीं होता और हानि होती है उनका मांस खाना वा नहीं ?

रक्षक:—न खाना चाहिए, क्योंकि वे भी उपकार में आ सकते हैं। देखो १०० भंगी जितनी शुद्धि करते हैं उन से अधिक एक सूअर वा मुर्गा, अथवा मोर आदि पक्षी सर्प आदि की निवृत्ति करने से पवित्रता और अनेक उपकार करते हैं और जैसे मनुष्यों का खान-पान दूसरे के खाने-पीने से उनका जितना अनुपकार होता है वैसे जंगली मांसाहारी का अन्न जंगली पशु और पक्षी हैं। और जो विद्या वा विचार से सिंहादि वनस्थ पशु और पक्षियों से उपकार लेवें तो अनेक प्रकार का लाभ उनसे भी हो सकता है। इस कारण मांसाहार का सर्वथा निषेध होना चाहिए।

स० प्र० पृ० २२० द० ग्र० पर इस विषय में इस प्रकार लिखा है:—

जब अश्वालम्भ अर्थात् घोड़े को मार के अथवा [गवालम्भ] गाए को मार के होम करना ही वेदविहित नहीं है। तो उसका कलियुग में निषेध माना जाए तो त्रेता आदि में विधि आ जाए। तो इस में ऐसे दुष्ट काम का श्रेष्ठ युग में होना सर्वथा असंभव है। और संन्यास की वेदादि शास्त्रों में विधि है उसका निषेध करना निर्मूल है। जब मांस का निषेध है तो सर्वथा ही निषेध है।

(५) मांसभक्षण दुष्ट व्यसन है।

स्वायंभव राजा से लेकर पाण्डवपर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती

राज्य था। तत्पश्चात् आपस के विरोध से लड़ कर नष्ट हो गए क्योंकि इस परमात्मा की सृष्टि में अभिमानी अन्यायकारी अविद्वान् लोगों का राज्य बहुत दिन नहीं चलता। और यह संसार की स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि जब बहुत सा धन असंख्य प्रयोजन से अधिक होता है। तब आलस्य पुरुषार्थरहितता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ति और प्रमाद बढ़ता है। इस से देश में विद्या सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुण और दुष्ट-व्यसन बढ़ जाते हैं। जैसे कि मद्य-मांससेवन, बाल्यावस्था में विवाह:—(स० प्र० पृ० ४०२ द० ग्र०)

जो ये सात दुर्गुण दोनों कामज और क्रोधज दोषों में गिने हैं इन में से पूर्व २ अर्थात् व्यर्थ व्यय से कठोर वचन, कठोर वचन से अन्याय से दण्ड देना, इस से मृगया खेलना, इस से स्त्रियों का अत्यन्त संग, इस से जुआ अर्थात् द्यूत करना और इससे भी मद्यादिसेवन करना बड़ा दुष्ट व्यसन है। स० प्र० पृ० २४८ द० ग्र०

नोट:—यहां भी मद्यादि में मांसभक्षण आ जाता है।

(६) मांस-भक्षण अन्याय है:- गो० नि० पृ० ६२७ द० ग्र० ।

जो प्रत्यक्ष दृष्टान्त देखना चाहो तो एक मांसाहारी का एक दूध घी और अन्नाहारी मथुरा के मल्ल चौबे से बाहुयुद्ध हो, तो अनुमान है कि चौबा मांसाहारी को पटक उस की छाती पर चढ़ ही बैठेगा। पुन: परीक्षा होगी कि किस के खाने से बल न्यून और अधिक होता है। भला तनिक विचार करो कि छिलकों के खाने से अधिक बल होता है, अथवा रस और जो सार है उसे खाने से ? मांस छिलके के समान और दूध घी साररस तुल्य है। इसको जो युक्तिपूर्वक खावे तो मांस से अधिक गुण और बलकारी होता है। फिर माँस का खाना व्यर्थ और हानिकारक

अन्याय अधर्म और दुष्ट-कर्म क्यों नहीं (अर्थात् दुष्ट कर्म है) ।

(७) मांस-भक्षण अधर्म है ।

नोट:—उपरिलिखित गो० नि० के १२ पृ० के उद्धरणमें जहां पर स्वामी जी महाराज मांसभक्षण को दुष्ट कर्म ठहराते हैं, वहां ही इसे अधर्म भी लिखते हैं ।

वाममार्गियों के पञ्चमकारों वाले श्लोक को उद्धृत करके उनका खण्डन करते हुए स्वामीजी महाराज पुनः इसी विषयमें स० प्र० पृष्ठ ४१० द० अ० मा० में लिखते हैं: ।

अर्थात् देखो इन गवर्गण्ड पोपों की लीला कि जो वेदविरुद्ध महा अधर्म के काम हैं उन्हीं को श्रेष्ठ वाममार्गियों ने माना। मद्य, मांस, मीन अर्थात् मछली, मुद्रा, पूरी कचौरी और बड़े रोटी आदि चर्वण, योनि पात्राधार मुद्रा और पांचवां मैथुन अर्थात् पुरुष सब शिव और स्त्री सब पार्वती के समान मान कर "अहं भैरवस्त्वं भैरवी ह्यावयोरस्तु संगमः" चाहे कोई पुरुष वा स्त्री हो इस ऊट-पटांग वचन को पढ़ के समागम करने में वे वाममार्गी दोष नहीं मानते ।

नोट—यहां इन पंच मकारों को स्वामी जी महाराज महा अधर्म के काम मानते हैं और इस कारण वाममार्ग का खण्डन कर रहे हैं। इन पंच मकारों में एक मांसभक्षण भी है ।

(८) मांस-भक्षण कुलक्षण है—स० प्र० पृ० २८८ द० प्र० ।

"आर्यावर्त देशवासियों का आर्यावर्त देश से भिन्न २ देशों में जाने से आचारभ्रष्ट हो जाता है वा नहीं"। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए और यह दर्शाते हुए कि हमारे पूर्वज व्यापार और विजय-यात्रादि के लिये देश-देशांतरों और द्वीप-द्वीपान्तरों में जाया करते थे स्वामी जी महाराज इस विषय में लिखते हुए, शंका करते हैं—

"यह केवल मूर्खता की बात नहीं तो और क्या है? हां इतना

कारण तो है कि जो लोग मांस-भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धि से दूषित होते हैं इस लिये उनके संग करने से आर्यों को भी यह कुलक्षण न लग जाय, यह तो ठीक है।

(९) मांसभक्षण महापाप है स० प्र० पृ० ६६१-६६२ द० ग्र०।

समीक्षकः—अब सुनिये! ईसाईयों में पाप करने से कोई धनाढ्य भी न डरता होगा और न दरिद्र, क्योंकि इन के ईश्वर ने पापों का प्रायश्चित्त करना सहज कर रखा है। एक यह बात ईसाईयों की बाईबल में बड़ी अद्भुत है कि विना कष्ट किये पाप से पाप छूट जाए क्योंकि एक तो पाप किया और दूसरे जीवों की हिंसा की और खूब आनन्द से मांस खाया और पाप भी छूट गया।

नोट—यहां बाईबल में लिखे मांसभक्षण से पापों के प्रायश्चित्त पर स्वामी जी महाराज शंका करते हैं "विना कष्ट किये पाप से पाप छूट" यह पंक्ति विशेष विचारणीय है। यहां स्पष्ट मांसभक्षण को पाप माना गया है। इसी विषय में गो० नि० पृ० १२२ द० ग्र० माला पर एक गौ कितने मनुष्यों को लाभ पहुँचाती है इसकी गणना करते हुये स्वामी जी महाराज लिखते हैं—

दूध और अन्न को मिला कर देखने से निश्चय है कि ४१०४४० मनुष्यों का पालन एक वार के भोजन से होता है। अब छः गाय की पीढ़ी पर पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जाये तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इस के मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी मांसाहारी मनुष्य एक वार तृप्त हो सकते हैं। देखो तुच्छ लाभ के लिये लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं? (अर्थात् महा पाप है।)

इसी विषय में आगे लिखा है:—गो० नि० पृ० ९२४-२५ द० ग्र०

इसलिये यजुर्वेद के प्रथम ही मन्त्र में परमात्मा की आज्ञा है

कि (अघ्न्याः + यजमानस्य पशून् पाहि) हे पुरुष ! तू इन पशुओं को कभी मत मार, और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिन से तेरी भी पूरी रक्षा होवे। और इसी लिये ब्रह्मा से लेकर आजपर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं।

(१०) मृगया (शिकार खेलना) महादुष्ट व्यसन है—

स० प्र० पृ० १४२ द० प्र०

काम के व्यसनों में बड़े दुर्गुण, एक मद्यादि अर्थात् मदकारक द्रव्यों का सेवन, दूसरा पांसों आदि से जुआ खेलना, तीसरा स्त्रियों का विशेष संग, चौथा मृगया खेलना, ये चार महा दुष्ट व्यसन हैं।

नोट—सं० २ तथा ५ देखिये।

(११) मांसभक्षी राक्षस हैं स० प्र० पृ० २७७ द० प्र०।

"जो उत्तम तमोगुणी हैं वे चारण (जो कि कविता दोहादि बना कर मनुष्यों की प्रशंसा करते हैं) सुन्दर पक्षी, दाम्भिकपुरुष अर्थात् अपने सुख के लिये अपनी प्रशंसा करने हारे, राक्षस जो हिंसक, पिशाच, अनाचारी अर्थात् मद्यादि के आहारकर्त्ता और मलिन रहते हैं वह उत्तम तमोगुण के कर्म का फल है।

(१२) मांसाहारी म्लेच्छ हैं। स० प्र० पृ० ३६२ द० प्र०।

जो जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े, बिगड़े दुर्गन्धादि से दूषित, अच्छे प्रकार न बने हुए, और मद्यमांसाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्यमांस के परमाणुओं से ही पूरित है उनके हाथ का न खावें।

नोट:—यहां स्वामी जी महाराज ने मद्यमांसाहारियों को ही म्लेच्छ नाम दिया है।

(१३) मांस-भक्षक घातक और हिंसक हैं।

अनुमति (मारने की सलाह) देने, मांस के काटने, पशु आदि के मारने, उनको मारने के लिये लेने और बेचने, मांस के पकाने, परसने और खाने वाले आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पापकारी हैं। गो.नि.पृ.६३०.द.ग्र.।

(१४) मांसाहारी अपराधी हैं और मांसाहारियों के हाथ का खाना उचित नहीं। स० प्र० पृ० ३६१ द० ग्र०।

हां! मुसलमान ईसाई आदि मद्यमांसाहारियों के हाथ के खाने में आर्यों को भी मद्यमांसादि खाना पीना अपराध पीछे लग पड़ता है।

(१५) मांसाहारी प्रपंची होते हैं। स० प्र० पृ० ६५६ द०ग्र०।

अब विचारिये ईसाईयों का परमेश्वर गाए बैल आदि की भेंट लेने वाला जो कि अपने लिये बलिदान कराने के लिये उपदेश करता है वह बैल गाए आदि पशुओं के लोहू मांस का भूखा प्यासा है वा नहीं? इसलिये वह अहिंसक और ईश्वरकोटि में गिना कभी नहीं जा सकता। किन्तु मांसाहारी प्रपञ्चो मनुष्य के सदृश है।

(१६) मांसभक्षक विश्वासघाती है।

देखिये! जो पशु निःसार घास तृण पत्र फल फूलादि खावें और सार दूधादि अमृत रूपी रत्न देवें, हल, गाड़ी आदि में चल के अनेकविध अन्नादि उत्पन्न कर सब के बल-बुद्धि पराक्रम को बढ़ा के नीरोग करें, पुत्र पुत्री और मित्रादि के समान पुरुषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जहां बांधें वहाँ बँधे रहें, जिधर चलावें उधर चलें, जहां से हटावें वहां से ही हट आवें, देखने

और बुलाने पर समीप चले आवें, जब कभी व्याघ्रादि पशु वा मारने वाले को देखें अपनी रक्षा के लिये पालन करने वाले के समीप दौड़ कर आवें कि यह हमारी रक्षा करेगा, जिनके मरने पर चमड़ा भी कण्टक आदि से रक्षा करे, जङ्गल में चर के अपने बच्चे और स्वामी के लिये दूध देने को नियत स्थान पर नियत समय चले आवें, अपने स्वामी की रक्षा के लिये तन मन धन लगावें, जिनका सर्वस्व राजा और प्रजा आदि मनुष्यों के सुख के लिये है, इत्यादि शुभ-गुणयुक्त सुख-कारक पशुओं के गले छुरों से काट कर, जो अपना पेट भर, सर्व संसार की हानि करते हैं क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी, दुःख देने वाले और पापी जन होंगे। (गो० नि० पृ० ९२४ द० ग्र०)

"राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु वा मनुष्य हों उन को दण्ड देवें और प्राण से भी वियुक्त कर दें।

प्रश्नः- फिर क्या उनका मांस फेंक दें ?

उत्तरः- चाहे फेंक दें चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती। किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है। जितना हिंसा और चोरी विश्वासघात, छल कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य है। स० प्र० पृ० ३९४ द०ग्र०।

(१७) मांसाहारी निष्ठुर, कठोर, स्वार्थी और मूर्ख होते हैं। गो० नि० पृ० ९२५ द० ग्र०

हे परमेश्वर क्यों इन मांसाहारियोंके आत्मा में दया प्रकाश कर निष्ठुरता कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषोंको दूर नहीं करता

(१८) पशुहिंसक मनुष्यों के घातक हैं।

स० प्र० पृ० ३६३ पर गौ, भैंस और बकरी के लाभ दर्शाकर पुनः लिखते हैं—

"वैसे हाथी, घोड़े ऊंट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाला जानियेगा।

(१९) मांसभक्षण आर्यों के दुःखों की वृद्धि का कारण है

"देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त वा अन्य भूगोल में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्तते थे, क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्त होते थे जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। स० प्र० पृ० ३६३ द०प्र०।

(२०) मांसाहारियों के रसोईघर का घिनौना चित्र।

"जैसे मियां जी के रसोई के स्थान में कहीं कोइला, कहीं राख, कहीं लकड़ी, कहीं फूटो हाण्डी, कहीं जूठी रकेबी, कहीं हाड़ गोड़ पड़े रहते हैं और मक्खियों का तो कहना ही क्या! वह स्थान ऐसा बुरा लगता है कि जो कोई श्रेष्ठ मनुष्य जाकर बैठे तो उसे वान्त होने का भी सम्भव है। स० प्र० पृ० ३६६ द०प्र०

(२१) मांसाहार वाममार्गियोंकी लीला और पामरपन है।

प्रोक्षित, अर्थात् यज्ञ में मांस खाने में दोष नहीं। ऐसी पामरपन की बातें वाममार्गियों ने चलाई हैं। स० प्र० पृ० ४१३ द०प्र०

इसी विषय में स्वामीजी महाराज स०प्र०पृ०५५६ द०प्र० पर लिखते हैं—

"और जो मांस खाना है यह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारों

की लीला है इस लिए उन को राक्षस कहना उचित है । परन्तु वेदोंमें कहीं मांसका खाना नहीं लिखा।

(२२) मांसाहारी दयाहीन होते हैं—स०प्र०पृ० ६४६ द०प्र०।

"समीक्षक:—अब देखिए सज्जन लोगो ! जिनका ईश्वर बछड़े का मांस खावे उसके उपासक गाए बछड़े आदि पशुओं को क्यों छोड़ें। जिसको कुछ दया नहीं और मांस के खाने में आतुर रहे वह विना हिंसक मनुष्य के ईश्वर कभी हो सकता है ?"

देखो ! मांसाहारी मनुष्यों में दया आदि उत्तम गुण होते ही नहीं। गो०क०नि० २८पृ०:—

(२३) मांसाहारी जगत् के लिए हानिकारक हैं—

"जब ईसाईयों का खुदा भी बैलों का बलिदान लेवे तो उसके भक्त गाए के बलिदान की प्रसादी से पेट क्यों न भरें ? और जगत् की हानि क्यों न करें ? स०प्र०पृ० ६२८ द०प्र०

(२४) स्वामीजी मांसाहार को जंगलीपन मानते हैं—

"अब देखिए, ये सब जंगली लोगों की बातें हैं वा नहीं? और परमेश्वर बैलों का बलिदान लेता और वेदी पर लोहू छिड़काता, यह कैसी जंगलीपन असभ्यता की बात है !" स०प्र० पृ०६५८ द०प्र०।

"समीक्षक:—वाह जी ! यदि ऐसा है तो इनके अध्यक्ष तथा न्यायाधीश तथा सेनापति आदि पाप करने से क्यों डरते होंगे ? आप तो यथेष्ट पाप करें और प्रायश्चित्त के बदले में गाय, बछिया, बकरे आदि के प्राण लेवें, तभी तो ईसाई लोग किसी पशु वा पक्षी के प्राण लेने में शङ्कित नहीं होते। सुनो ईसाई लोगो ! अब तो इस जंगली मत को छोड़ के सुसभ्य धर्ममय वेद-मत को स्वीकार करो कि जिससे तुम्हारा कल्याण हो। स० प्र० पृ० ६६१ द० प्र०

(२५) मांसभक्षण छोकड़ापन है, स० प्र० पृ० ४१४ द० प्र०

"मांस-भक्षण करने, मद्य पीने, परस्त्री-गमन करने आदि में दोष नहीं है, यह कहना छोकड़ापन है। क्योंकि विना प्राणियों के पीड़ा दिए मांस प्राप्त नहीं होता और विना अपराध के पीड़ा देना धर्म का काम नहीं।"

(२६) बीमारी की अवस्था में भी मांसभक्षण का निषेध—

"हिंसक:—जिस देश में सिवाय मांस के अन्य कुछ नहीं मिलता वहां वा आप्तकाल में, अथवा रोगनिवृत्ति के लिए मांस खाने में दोष नहीं होता"।

रक्षक—यह आपका कहना व्यर्थ है,क्योंकि जहां मनुष्य रहते हैं वहां पृथ्वी अवश्य होती है,जहां पृथ्वी है वहां खेती वा फलफूल आदि अवश्य होते हैं और जहां कुछ भी नहीं होता वहां मनुष्य भी नहीं रह सकते। जहां ऊसर भूमि है, वहां मिष्ट जल और फलादि के न होने से मनुष्यों का रहना दुर्घट है और आपत्काल में भी अन्य उपायों से निर्वाह कर सकते हैं। जैसे मांस के न खाने वाले करते हैं और बिना मांस के रोगों का निवारण भी ओषधियों से यथावत् होता है। इसलिये मांस खाना अच्छा नहीं। गो०नि०पृ०१२७द०प्र०।

(२७) मांसभक्षण, मद्यपान के समान पाप है।

"इसलिये दयालु परमेश्वर ने वेदों में मांस खाने वा पशु आदि के मारने की विधि नहीं लिखी। मद्य भी मांस खाने का ही कारण है। इसलिये यहां संक्षेप से लिखते हैं:—

प्रमत्त:—कहो जी मांस तो छूटा सो छूटा, परन्तु मद्य पीने में तो कोई भी दोष नहीं?

शान्त:—मद्य पीने में भी वैसे ही दोष हैं जैसे कि मांस खाने

में। मनुष्य मद्य पीने से नशे के कारण नष्टबुद्धि होकर अकर्त्तव्य कर लेता और कर्त्तव्य को छोड़ देता है। गो०नि०पृ०६३०,६३१द०प्र०

नोट:—भगवान् मनु ने जो पाप गिनाए हैं, उन में मद्यपान और मांसाहार भी आजाते हैं। भगवान् दयानन्द इन दोनों को बराबर समझते हैं।

टिप्पणी—महर्षि दयानन्द जी मांसाहार के अत्यन्त विरुद्ध थे। अपने ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर इसका खण्डन किया है। मैंने श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी के कहने पर ऋषि के वेदभाष्यों और पत्रों के अतिरिक्त उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों से प्रमाण संग्रह कर दिए हैं। आशा है, लोगों को मांसाहार के विषय में महर्षि की सम्मति में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रहेगा। और वे इस घिनौने कर्म्म को सर्वथा छोड़ देंगे। इति।

श्री प्रकाशचन्द्र मुद्रक द्वारा, दी आर्य प्रेस लिमिटेड, १७ मोहनलाल रोड, लाहौर में मुद्रित।